e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 12, December 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412010 |

मन्नू भंडारी के साहित्य में सामाजिक चेतना

डा. अनिता सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डी. बी. एस. कॉलेज, गोविंद नगर, कानपुर

सार

मन्नू भंडारी (३ अप्रैल १९३१ — १५ नवंबर २०२१) हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार थीं। मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में जन्मी मन्नू का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उन्होंने एम ए तक शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। धर्मयुग में धारावाहिक रूप से प्रकाशित उपन्यास आपका बंटी से लोकप्रियता प्राप्त करने वाली मन्नू भंडारी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। लेखन का संस्कार उन्हें विरासत में मिला। उनके पिता सुख सम्पतराय भी जाने माने लेखक थे।

प्रमुख कृतियाँ

कहानी

एक प्लेट सैलाब (१९६२), मैं हार गई (१९५७), तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है (१९६६), त्रिशंकु, आंखों देखा झूठ

अकेली - यह कहानी सोमा बुआ नाम के पात्र को केंद्र में रखकर लिखी गई है। सोमा अपने पास पड़ोस से घुलने-मिलने के प्रयासों के बावजूद अकेली पड़ जाती है। वह अकेली इसलिए है क्योंकि वह परित्यक्ता है, बूढ़ी हो चली है तथा उसका पुत्र भी उसे छोड़कर जा चुका है। अपने परिवेश के साथ घुलने मिलने के उसके प्रयास भी एकतरफा हैं।

उपन्यास

आपका बंटी (१९७१) - यह उपन्यास विवाह विच्छेद की त्रासदी में पिस रहे एक बच्चे को केंद्र में रखकर लिखा गया था।

एक इंच मुस्कान(१९६२) - लेखक और पति राजेंद्र यादव के साथ लिखा गया उनका उपन्यास एक इंच मुस्कान पढ़े लिखे आधुनिक लोगों की एक दुखांत प्रेमकथा है जिसका एक-एक अंक लेखक-द्वय ने क्रमानुसार लिखा।

महाभोज (१९७९) - यह उपन्यास नौकरशाही और राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच आम आदमी की पीड़ा को उद्घाटित करता है। इस उपन्यास पर आधारित नाटक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ था। इसी प्रकार यही सच है पर आधारित रजनीगंधा नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसको १९७४ की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

पुरस्कार और सम्मान

हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।

नाटक

`बिना दीवारों का घर' (१९६६)

प्रकाशित कृतियाँ

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412010 |

कहानी-संग्रह :- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, श्रेष्ठ कहानियाँ, आँखों देखा झूठ, नायक खलनायक विदूषक।

उपन्यास :- आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान और कलवा, एक कहानी यह भी।

पटकथाएँ :- रजनी, निर्मला, स्वामी, दर्पण।

नाटक :- बिना दीवारों का घर।

परिचय

मन्नू भंडारी एक असाधारण महिला थीं। वह स्वतंत्रता के बाद की उम्र में आने वाली लेखकों की पीढ़ी में लंबी थीं।

एक बेहतरीन लघु कथाकार और उपन्यासकार, उन्होंने अपने समय की पुरुष-प्रधान दुनिया को साहस और दृढ़ विश्वास के साथ चुनौती दी; और कोई उस महिला की झलक देख सकता है जो वह अजमेर में अपने बड़े होने के वर्षों से सही हो जाएगी।

1947 से ठीक पहले के उथल-पुथल भरे समय के दौरान एक कॉलेज के छात्र के रूप में, भंडारी पूरी तरह से प्रभात फेरी के देशभक्ति के चक्कर में फंस गए थे।, हरताल, विरोध और जुलूस। वह अपने पिता से भिड़ गई, जो अपनी बेटी के सड़कों पर लड़कों के साथ मार्च करने, नारे लगाने और जोशीले भाषण देने के विचार से पेट नहीं भर सका।

लेकिन जब, जैसा कि भनादारी ने कहा, आजादी के लिए आग तेज जल रहा था और उसकी रगों में खून नहीं लावा बह रहा था, उसे कौन रोक सकता था?[1]

जब उसने आगे बढ़कर अपने पिता के विरोध के बावजूद साथी हिंदी लेखक राजेंद्र यादव से शादी की तो उसने भी ऐसा ही धैर्य दिखाया। उसकी मुलाकात कलकत्ता में यादव से हुई, जहाँ वह आगे की पढ़ाई के लिए गई थी, और जहाँ, एमए के बाद, उसे एक स्कूल, बल्लीगंज शिक्षा सदन में हिंदी पढ़ाने की नौकरी मिली। यादव के साथ उनकी दोस्ती उनकी साझा साहित्यिक पृष्ठभूमि के कारण थी।

हमेशा एक उत्साही पाठक, भंडारी ने अपनी पहली लघु कहानी, मैं हार गई, ठीक उसी तरह लिखी । 1957 में 'कहानी' पत्रिका में इसके प्रकाशन से उत्साहित होकर, उन्होंने शमशान, अभिनेता और अन्य जैसी कहानियों के साथ तेजी से इसका अनुसरण किया । उनकी कई शुरुआती कहानियाँ उन पात्रों पर आधारित हैं जिन्हें वह अजमेर के ब्रह्मपुरी मुहल्ले में जानती थीं, जहाँ वह पली-बढ़ी थीं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412010 |

अपनी ओर से यादव ने पहले भी लिखना शुरू कर दिया था; उनका पहला उपन्यास प्रेत बोलते हैं (जिसे बाद में सारा आकाश नाम दिया गया) 1951 में प्रकाशित हुआ था। युवा युगल 1964 में दिल्ली चले गए, यह महसूस करते हुए कि कलकत्ता की तुलना में वहां हिंदी लेखकों के लिए बेहतर अवसर हैं। लेकिन बल्लीगंज शिक्षा सदन में नौ खुशहाल वर्षों के बाद, भंडारी इस कदम को लेकर आशंकित थे।

उसे चिंता करने की जरूरत नहीं है। उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस में लेक्चरर के रूप में नौकरी मिल गई, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अगले कई वर्षों में एक लेखक के रूप में लोकप्रियता और सफलता की बुलंदियों को छू लिया। उन्होंने लघु कथाएँ लिखना जारी रखा, उपन्यासों की ओर रुख किया और पटकथा लेखन में काम किया।

उनकी लघु कथाएँ - उनमें से 50 से अधिक हैं - एक विस्तृत श्रृंखला में फैली हुई हैं, लेकिन अपने सबसे अच्छे रूप में, वे छोटे शहरों और शहरों में मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के जीवन को एक दुर्लभ संवेदनशीलता के साथ पकड़ती हैं। रेत की दीवार को ही लें , जिसमें इंजीनियरिंग का छात्र रवि अपने परिवार को पैसों की तंगी से बचाने का दबाव महसूस करता है। या इखाने आकाश नई, जहां कलकत्ता की लड़की लेखा शहर से दूर अपने पति के परिवार के पास जाती है और उसे तनाव और दम घुटने वाले सपनों का पता चलता है।

भंडारी ने महिलाओं को सामाजिक प्रतिबंधों से मुक्त होने या अपनी सीमाओं में रहने के लिए संघर्ष करने के बारे में भी लिखा। में इक Kamzor लड़की की कहानी, रूप उसके जीवन का महत्वपूर्ण क्षणों में खुद को जताने में असमर्थ है। लेकिन दीवार, बच्चे और बरसात में, एक साहसी युवती अपने दबंग, असंवेदनशील पति पर चलती है।[2]

भंडारी 50 के दशक के मध्य में राजेंद्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर की महान तिकड़ी द्वारा शुरू किए गए नई कहानी आंदोलन का हिस्सा थे, जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ी के जीवन के अनुभवों और चिंताओं को दूर करने के लिए लघु कहानी प्रारूप का इस्तेमाल किया। तीनों पुरुष अत्यधिक प्रतिभाशाली थे और उनमें मेल खाने के लिए अहंकार था। लेकिन भंडारी उनमें से किसी पर भी हावी नहीं हुआ।

मोहन राकेश के साथ उसकी अच्छी दोस्ती थी; यहां तक कि जब यादव के साथ उनका झगड़ा हुआ, तब भी उन्होंने अपनी दोस्ती जारी रखी। "क्या मेरी अपनी स्वतंत्र पहचान नहीं है?" उसने राकेश से पूछा।

यादव के साथ भंडारी का विवाह अंततः समाप्त हो गया - 30 से अधिक वर्षों के बाद - लेकिन उन्होंने उदारता से स्वीकार किया कि वह एक वफादार जयजयकार और उनके लेखन के चैंपियन थे। उन्होंने एक साथ एक उपन्यास भी लिखा - एक इंच मुस्कान, एक लेखक, अमर और उनके जीवन की दो महिलाओं, अमला और रंजना की कहानी।

यादव ने अमर अध्याय और भंडारी को अमला और रंजना के दृष्टिकोण से लिखा। हिन्दी साहित्य में शायद यह एकमात्र ऐसा प्रयोगात्मक पति-पत्नी सहयोग है।

अवलोकन

1970 तक, भंडारी के चार लघु कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके थे और वह एक उपन्यास लिखने के लिए तरस रही थी। उसके दिमाग में एक विचार चल रहा था - नौ साल के लड़के बंटी की भावनात्मक कहानी, जिसके माता-पिता ने अलग होने का फैसला किया था। लेकिन अब उसकी अपनी एक बेटी थी, रचना, जिसे प्यार से टिंकू कहा जाता था (जो उस समय संयोग से नौ साल की थी), एक व्यस्त नौकरी और समय नहीं।

इसलिए उसने एक महीने के लिए मिरांडा हाउस हॉस्टल में एक कमरा लेने और अपनी किताब पर काम करने का फैसला किया। एक समय ऐसा आया जब उसे लगा कि उसकी बेटी उसे याद कर रही है और उसे घर जाना चाहिए। लेकिन यादव ही थे जिन्होंने उन्हें मना किया और जोर देकर कहा कि वह अपना उपन्यास पूरा करें।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412010 |

आपका बंटी को शुरुआत में 'धर्मयुग' पत्रिका में प्रसारित किया गया था और भंडारी को बड़े पैमाने पर फॉलो किया गया था। उसके घर पर प्रतिदिन पाठकों के पत्रों के ढेर आने लगे, जब तक कि एक दिन डाकिया ने उससे पूछा कि क्या वह घर पर कार्यालय खोलेगी!

उपन्यास ने बहुत चर्चा शुरू की, लेकिन भंडारी को हमेशा इस बात का पछतावा था कि बंटी के इर्द-गिर्द केंद्रित बहस और कुछ लोगों ने मातृत्व और अपनी महत्वाकांक्षाओं के बीच फंसी आधुनिक युवा मां शकुन की दुविधा पर प्रतिक्रिया दी।[3]

भंडारी की जीत का सिलसिला जारी रहा - 1974 में, बसु चटर्जी ने रजनीगंधा को रिलीज़ किया , जो उनकी छोटी कहानी, ये सच है पर आधारित थी , जो एक स्वतंत्र दिमाग वाली युवा शोध विद्वान, दीपा के बारे में थी, जिसे एक समर्पित प्रेमी और एक पुरानी लौ के बीच चयन करना होगा। सिल्वर जुबली मनाते हुए फिल्म एक वास्तविक हिट बन गई।

बाद में, भंडारी ने चटर्जी के लिए शरतचंद्र की कहानी, स्वामी को फिर से लिखा , जो तब तक एक करीबी पारिवारिक मित्र बन चुके थे। हालांकि फिल्म ने अच्छा प्रदर्शन किया, भंडारी ने चटर्जी के अंत से जोरदार असहमति जताई, जहां उन्होंने मिनी (नायिका) को उसके पति के चरणों में गिरा दिया। भंडारी का तर्क था कि अगर मिनी के पति ने उसे अपनी बाहों में ले लिया होता तो वही प्रभाव प्राप्त हो सकता था।

चटर्जी ने अपने दूरदर्शन धारावाहिक रजनी पर एक धर्मयुद्ध गृहिणी के बारे में एक लेखक के रूप में भी काम किया , और यह शो टैक्सी ड्राइवरों पर एक एपिसोड के प्रसारण के बाद सनसनी बन गया, जिसे भंडारी ने लिखा था।

1979 में भंडारी ने एक स्पष्ट राजनीतिक उपन्यास, महाभोज प्रकाशित किया , जिसे उन्होंने बिहार में 1977 के भयानक दलित-विरोधी बेलची नरसंहार के बारे में पढ़ने के बाद लिखा था। इस उपन्यास को थिएटर निर्देशक अमल अल्लाना ने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के लिए चुना था, जो अपने आप में एक सुनहरे दौर से गुजर रहा था, जिसमें मनोहर सिंह, सुरेखा सीकरी, उत्तरा बावकर और रघुवीर यादव जैसे कलाकार थे - जो सभी बन गए महाभोज कास्ट का हिस्सा ।

नाटक की शुरुआत 1982 में हुई और इसे खूब समीक्षाएं मिलीं। भंडारी ने स्वयं मंच अनुकूलन पर काम किया था और पाया कि उन्हें इसके लिए एक आदत है। इसमें कोई शक नहीं कि वह एक नाटककार के रूप में भी चमक पातीं, अगर वह अपना दिमाग इस पर लगातीं।

इतनी कामयाबी तो किसी का भी सिर घुमा सकती थी। लेकिन अविश्वसनीय रूप से, मन्नू भंडारी आत्मनिर्भर, आत्म-जागरूक, स्तर-प्रधान बने रहे।

उसके अंदर अहंकार का कोई निशान नहीं था; वास्तव में उनके पास जीवन भर सभी प्रकार के लोगों के साथ गहरी दोस्ती करने की एक उल्लेखनीय प्रतिभा थी - चाहे वह साथी लेखक हों, सहकर्मी हों, छात्र हों या दोस्तों के मित्र हों।[4]

बाद के वर्षों में, वह खराब स्वास्थ्य में फिसल गई और लंबी बीमारी के बाद सोमवार को उसकी मृत्यु एक बहुत बड़ा शून्य छोड़ गई। लेकिन यह एक स्थायी साहित्यिक विरासत भी छोड़ता है - एक बेहद प्रतिभाशाली लेखक की, जिसने अपने समय को ईमानदारी और सुंदरता के साथ व्यतीत किया। वास्तव में असाधारण महिला।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412010 |

विचार - विमर्श

प्रसिद्ध भारतीय लेखक मनु भंडारी का निधन हो गया है, उनके परिवार ने पुष्टि की है। वह 90 वर्ष की थी।

भंडारी ने गुरुग्राम में अंतिम सांस ली, जहां वह अपनी बेटी रचना यादव के साथ रह रही थी। "वह पिछले कुछ वर्षों से ठीक नहीं थी, और पिछले एक सप्ताह से अस्पताल में थी। आज दोपहर करीब 2 बजे उनका निधन हो गया। यह दुखद है कि एक प्रमुख साहित्यकार अब चला गया है, "फोटोग्राफर दिनेश खन्ना, उनके दामाद, ने indianexpress.com को बताया ।

भंडारी को कई किताबें लिखने का श्रेय दिया गया है, जो 1950 के दशक के अंत और 1960 के दशक की शुरुआत में भारत की हैं। हालांकि, उनके दो सबसे प्रसिद्ध हिंदी उपन्यास ' आपका बंटी ' और ' महाभोज ' हैं।भंडारी को ' नई कहानी ' आंदोलन के अग्रदूतों में से एक माना जाता था , जो एक हिंदी साहित्यिक आंदोलन था, जिसे निर्मल वर्मा, राजेंद्र यादव, भीष्म साहनी, कमलेश्वर, आदि जैसे प्रसिद्ध लेखकों द्वारा शुरू किया गया था।

50 और 60 के दशक में, एक स्वतंत्र भारत समाज में बदलाव के मामले में थोड़ा परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। शहरीकरण और औद्योगीकरण के लिए एक धक्का था, और इसने अधिक साहित्यिक बहस और चर्चा करने का अवसर खोला।इसलिए भंडारी और कई अन्य लेखकों ने नई कहानी आंदोलन के हिस्से के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किए । उन्होंने मानवीय भावनाओं पर, लैंगिक असमानता से निपटने वाले आख्यानों और कामकाजी और शिक्षित महिलाओं के एक नए वर्ग के उद्भव पर लिखा।

वह एक आगे की विचारक थीं और स्वतंत्रता के बाद के लेखकों में से एक थीं, जिन्होंने महिलाओं के बारे में लिखा, और उन्हें एक नई रोशनी में दिखाया - एक मजबूत, स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में। अपने लेखन के माध्यम से, उन्होंने महिलाओं-लोक के यौन, भावनात्मक, मानसिक और वित्तीय शोषण को चुनौती दी, अपनी कहानियों में महिला पात्रों का निर्माण किया, जिन्हें एक बुद्धि के साथ बकवास, मजबूत व्यक्तियों के रूप में देखा गया था।[5]

भंडारी का जन्म 3 अप्रैल, 1931 को मध्य प्रदेश के भानपुरा में हुआ था और वे अजमेर, राजस्थान में पले-बढ़े। उनके पिता एक स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने पहले अंग्रेजी-से-हिंदी और अंग्रेजी-से-मराठी शब्दकोशों में से एक का निर्माण किया।

उन्होंने अजमेर में अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की, और फिर कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एमए की डिग्री हासिल की।

परिणाम

मन्नू भंडारी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न थी इनके 5 कहानी संग्रह, 5 उपन्यास, 2 नाटक, 3 बाल रचनाएं प्रमुख हैं

मन्नू भंडारी के शब्दों में :-"लेखन ने मुझे अपने निहायत निजी समस्याओं के प्रति ऑब्जेक्टिव हो ना वह उभारना सिखाया है"

राजेंद्र यादव मन्नू के लेखन के बारे में कहते हैं :-"व्यर्थ के भावोच्छवास में नारी के आंचल में दूध और आंखों में पानी दिखा कर उसने (मन्नू ने)पाठकों की दया नहीं वसूली, वह यथार्थ के धरातल पर नारी का नारी की दृष्टि से अंकन करती है। इनके उपन्यास आपका बंटी को हिंदी क्लासिक्स में शामिल किया जाता है. एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु और आंखों देखा झूठ इनके चर्चित कहानी संग्रह हैं. पति और जाने-माने लेखक राजेंद्र यादव के साथ लिखा गया इनका उपन्यास एक इंच मुस्कान भी ख़ूब पढ़ा गया. महाभोज और बिना दीवारों के घर भी इनकी उल्लेखनीय रचनाएं है. वरिष्ठ लेखिका मन्नू भंडारी के बारे में इतनी जानकारी गूगल पर मौजूद है, उनके व्यक्तित्व के अनजाने पहलुओं से परिचित करा रही हैं उनकी बेटी रचना यादव । "यह सब सोचते-सोचते, इस निष्कर्ष पर पहुंचती हूं कि मूल में तो उनका एक ही व्यक्तित्व है. बस आज उसने परिस्थितियों की चादर ओढ़ ली है. पुरानीवाली मन्नू भंडारी ही मम्मी का असली व्यक्तित्व है. आज वह कमज़ोर ज़रूर पड़ गया है, पर जब-तब सिर उठा ही देता है. फिर भी जो एक ही सांस में अलग-अलग तरह के अचार डालने से लेकर, समाज में औरतों के शोषण की बात कर जाए. मुझे ज़िंदगीभर 'औरतें कमज़ोर नहीं होतीं. तुम्हें केवल गृहणी बनकर जीवन नहीं

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 12, December 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0412010 |

काटना. करियर बनाना है. कुछ ख़ास करना है.' की घुट्टी पिला-पिलाकर बड़ा करे. फिर जैसे ही मैं २२ साल की हुई 'शादी करो' का राग अलापने लगे. किसी एक बात पर खिलखिलाकर हंसे और अगले ही पल, बिना आभास दिए उसी बात पर रोने लगे. मुझे कम उम्र से ही अकेले ट्रेन में और बस में सफ़र करने के लिए प्रोत्साहित करे. गर्मी की छुट्टियों में अकेले कलकत्ता और जयपुर भेज दे. मुझे को-एज्यूकेशन कॉलेज में दाख़िला लेने के लिए प्रेरित करे, यह कहते हुए,'ज़िंदगी केवल लड़कियों के साथ थोड़े ही काटनी है. लड़कों से भी मिला-जुला करो, बातचीत करो. दुनिया में अनेक तरह के लोग हैं. यदि वही चार-छह सहेलियों में घुसी रहोगी तो कितना सीख लोगी?' पर २१ साल की उम्र में मैं जब बम्बई (मुंबई) जाकर नौकरी करने की बात करूं तो क़तई राज़ी न हो. समाजसेवा के लिए, दंगों में, भूकंप पीड़ितों के लिए अपना सर्वस्व लुटाने के लिए तैयार हो जाना, पर सब्ज़ीवाले से दस-दस रुपए के लिए बहस करे-ऐसे व्यक्ति का विश्लेषण करने से अधिक चुनौतीभरा काम भला क्या हो सकता है?"[6]

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी हिन्दी की लोकप्रिय कथाकारों में से हैं। नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच आम आदमी की पीड़ा और दर्द की गहराई को उद्घाटित करने वाले उनके उपन्यास `महाभोज' (१९७९) पर आधारित नाटक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ था। इसी प्रकार 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसको १९७४ की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

प्रसिद्ध भारतीय लेखक मनु भंडारी का निधन हो गया है, उनके परिवार ने पुष्टि की है। वह 90 वर्ष की थी।

वह एक आगे की विचारक थीं और स्वतंत्रता के बाद के लेखकों में से एक थीं, जिन्होंने महिलाओं के बारे में लिखा, और उन्हें एक नई रोशनी में दिखाया - एक मजबूत, स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में। अपने लेखन के माध्यम से, उन्होंने महिलाओं-लोक के यौन, भावनात्मक, मानसिक और वित्तीय शोषण को चुनौती दी, अपनी कहानियों में महिला पात्रों का निर्माण किया, जिन्हें एक बुद्धि के साथ बकवास, मजबूत व्यक्तियों के रूप में देखा गया था।[7]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका और कथाकार मन्नू भंडारी का निधन". अमर उजाला. अभिगमन तिथि 15 November 2021.
2. "मन्नू भंडारी". कैसे इंडिया. अभिगमन तिथि 26 November 2021.
3. "लेखिका मन्नू भंडारी का निधन, 'आपका बंटी' और 'महाभोज' जैसी कालजयी रचनाओं ने दिलाई थी पहचान". आज तक. अभिगमन तिथि 15 नवम्बर 2021.
4. मन्नू भंडारी (1994). Dasa pratinidhi kahāniyāṁ. Kitabghar Prakashan. पपृ॰ 6–. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-7016-214-8.
5. "नहीं रहीं 'महाभोज' और 'आपका बंटी' लिखने वाली मशहूर लेखिका मन्नू भंडारी, 90 की उम्र में निधन". नवभारत टाइम्स. अभिगमन तिथि 15 नवम्बर 2021.
6. Singh, R.S. (1973). "Mannu Bhandari". Indian Literature. 16 (1/2): 133–142. JSTOR 24157435.
7. "मन्नू भंडारी". अभिव्यक्ति. मूल से 3 फ़रवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २३ दिसंबर २००९.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com